प्रेस विज्ञप्ति

ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी का देहावसान

माउण्ट आबू, 25 अगस्त। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका एवं विश्व के चुनिंदा आध्यात्मिक नेतृत्व में शुमार बालब्रह्मचारिणी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणी ने आज प्रातः 10 बजकर 5 मिनट पर शान्तिवन में अपनी पार्थिव देह त्याग दी है। 87 वर्षीय दादीजी विगत कुछ माह से अस्वस्थ थी। उनका अंतिम संस्कार शांतिवन परिसर, आबू रोड में होगा।

संस्था के मुख्यालय से जारी प्रेस विज्ञप्ति में मीडिया प्रवक्ता ब्रह्माकुमार करूणा ने बताया कि संसार की सबसे बड़ी महिला नेतृत्व प्रधान संस्था प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने मुख्य प्रशासिका दादीजी के नेतृत्व में विशाल वटवृक्ष का रूप लिया। आज विश्व के 130 देशों में आठ हजार से भी अधिक सेवाकेन्द्रों के माध्यम से संस्था समाज में आध्यात्मिक सशक्तिकरण एवं नैतिक मूल्यों के संवर्द्धन के लिए समर्पित है। दादीजी के नेतृत्व में ही संयुक्त राष्ट्र ने इस संस्था को अशासकीय संस्था के रूप में संबद्धता प्रदान की। विश्व शांति की दिशा में संस्था के प्रयासों को सराहते हुए संयुक्त राष्ट्र ने इसे 'विश्व शांति दूत' पुरस्कार से नवाजा। दादी यह पुरस्कार पाने वाली भारत की प्रथम महिला है। दादीजी को अमेरिका में विश्व धर्म संसद के आयोजन में अध्यक्ष चुना गया था। अनेक राष्ट्र प्रमुखों, राजनेताओं, प्रशासकों, शिक्षाविदों, धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेताओं तथा सुप्रसिद्ध समाजसेवियों का दादीजी के प्रति गहरा सम्मान भाव रहा है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रभावित होकर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर ने उन्हें मानद डाक्टरेट की उपाधि से विभूषित किया।

आपके कुशल नेतृत्व में वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का विश्व में चहुँ ओर व्यापक प्रसार के साथ सभी जातियों, धर्मों, संस्कृतियों एवं भाषाओं को सम्मान देते हुए तथा रूढ़ियों, अंधविश्वासों, कुरीतियों को दरकिनार कर मानव समाज को विशुद्ध आध्यात्मिक धारा से जोड़ने का उत्कृष्ट कार्य हुआ है। समय प्रति समय विभिन्न स्थानीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनों के माध्यम से संस्था स्वर्णिम भारत के पुनर्निर्माण के लक्ष्य की ओर अग्रसर हुई है। दादीजी के कुशल प्रशासन एवं मार्गदर्शन में संस्था ने प्रगति के अनेक उल्लेखनीय सोपान तय किये हैं।

दादी प्रकाशमणी संस्था की स्थापना के समय 1937 से जुड़ी और उन्होंने अपना समूचा जीवन ही मानवता की सेवार्थ अर्पित कर दिया था। सादगी की प्रतिमूर्ति दादीजी सन् 1969 में संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्माके उपरांत संस्था की मुख्य प्रशासिका बनाई गयी थी। तब से अनवरत 38 वर्षों तक आपने संस्था को नेतृत्व दिया।

21 अगस्त, 2007 को सायं दादीजी का स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण उन्हें अहमदाबाद के स्टर्लिंग हास्पिटल ले जाया गया था। जहाँ डाक्टरों ने मेडिकल जांच के बाद ब्रेन हेमरेज होने के कारण कोमा में जाना बताया। चिकित्सकों से परामर्श के बाद उन्हें पुनः शान्तिवन लाया गया। यहाँ भी डाक्टरों ने अंतिम समय तक उनका जीवन बचाने का प्रयास किया।